पंचम अध्याय

शोधसार, निष्कर्ष

एवं सुझाव

अध्याय –पंचम

शोधसार, निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 प्रस्तावना :–

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसका जीवन समाज में रहकर ही सफल हो सकता है। मानव की भाषा ही एकमात्र साधन है जिसके माध्यम से वह अपने भावों और विचारों का आदान–प्रदान करता है। मानव एवं भाषा दोनों एक दूसरे के पूरक है। रचनात्मकता के द्वारा हम उसे सौम्य एवं सुग्राहय बना सकते हैं। वर्तमान समय में हिन्दी भाषा शिक्षण की स्थिति ठीक नहीं है। भाषा का मौलिक स्वरूप विलुप्त होता जा रहा है। भाषा को मात्र पाठ्यक्रम का विषय बनाकर पढ़ाया जा रहा है।

आज भाषा शिक्षकों और विद्यार्थियों को सजृनात्मकता से जोड़ने की आवश्यकता है। जिससे भाषा शिक्षण के भाषा विकास हो ओर मानव जीवन की उन्नति हो सके। भाषा सृजनशील है और इसे सृजनात्मकता के माध्यम से अधिक से अधिक समृद्ध बनाया जा सकता है। इसके लिए छात्रों की सृजनशीलता जानना उसका अध्ययन करना यह एक महत्वपूर्ण बात है। छात्रों में सृजनशीलता बढ़ाने के लिए प्रयास करना जरूरी है।

5.2 समस्या कथन :–

"कक्षा 8 वीं के विद्यार्थियों की भाषा सृजनशीलता एवं हिन्दी में उपलब्धि का अध्ययन"

5.3 प्रस्तुत अनुसंधान के उद्देश्य :–

1. विद्यार्थियों की भाषा सृजनशीलता का अध्ययन करना।

2. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपालब्धि का अध्ययन करना।

3. छात्रों की भाषा सृजनशीलता तथा शैक्षिक उपलब्धि के संबंध का अध्ययन करना।

4. छात्राओं की भाषा सृजनशीलता तथा शैक्षिक उपलब्धि के संबंध का अध्ययन करना।

5. विद्यार्थियों की भाषा सृजनशीलता तथा शैक्षिक उपलब्धि के संबंध का अध्ययन करना।

5.4 प्रस्तुत अनुसंधान की परिकल्पनाएँ :–

1. छात्र तथा छात्राओं की भाषा सृजनशीलता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

2. छात्र तथा छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

3. छात्रों की भाषा सृजनशीलता तथा शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक संबंध नहीं है।

4. छात्राओं की भाषा सृजनशीलता तथा शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक संबंध नहीं है।

5. विद्यार्थियों की भाषा सृजनशीलता तथा शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक संबंध नहीं है।

5.5 प्रस्तुत अनुसंधान के चर :–

स्वतंत्र चरः–

(i) भाषा सृजनशीलता

(ii) लिंग

आश्रित चरः–

(i) उपलब्धि

5.6 प्रतिदर्श का चयन :–

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता द्वारा प्रतिदर्श का चयन यादृच्छिक विधि से किया है। जिसमें 80 विद्यार्थी हैं उसमें 40 छात्र तथा 40 छात्राओं को लिया गया है। यह दो स्कूलो से लिया गया है।

5.7 शोध में प्रयुक्त उपकरण :–

उपकरण :– भाषा सृजनशीलता परीक्षण

डॉ. एस.पी. मलहोत्रा, सुचेता कुमारी

उपलब्धि हेतु कक्षा 8वीं के अर्द्ध वार्षिक परीक्षा का परीक्षाफल लिया गया।

5.8 प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु प्रयुक्त सांख्यिकीय :–

प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु 'मध्यमान', 'मानक विचलन', 'टी' अनुपात एवं 'सहसंबंध' 'r' का उपयोग किया गया।

5.9 प्रस्तुत अनुसंधान की मर्यादा :–

1. अध्ययन अहमदनगर जिले के एक ही तहसील तक सीमित रखा गया है।
2. अध्ययन दो विद्यालय तक सीमित रखा गया है।
3. अध्ययन कक्षा आठवीं के विद्यार्थियों तक सीमित रखा गया है।
4. अध्ययन 80 विद्यार्थियों तक सीमित रखा गया है।

5.10 निष्कर्ष :–

प्रस्तुत शोध में न्यादर्श प्रदत्तों का संकलन एवं विश्लेषण के पश्चात् निम्नलिखित, निष्कर्ष प्राप्त हुए :–

निष्कर्ष–

1. छात्र तथा छात्राओं की भाषा सृजनशीलता में सार्थक अंतर है।
2. छात्र तथा छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. छात्रों की भाषा सृजनशीलता तथा शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक संबंध है।
4. छात्राओं की भाषा सृजनशीलता तथा शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक संबंध है।
5. विद्यार्थियों की भाषा सृजनशीलता तथा शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक संबंध है।

अतः इससे यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि भाषा सृजनशीलता पर अधिक जोर देना चाहिए। भाषा सृजनशीलता बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए। उससे विद्यार्थियों का सर्वांगिण विकास होता है। भाषा सृजनशीलता का उपलब्धि पर परिणाम होता है। और विद्यार्थियों के गुणों में बढ़ोत्री होती है।

5.11 सुझावः–

5.11.1 शिक्षकों के लिए सुझाव–

1. शिक्षको ने विद्यार्थियों को कहानियाँ लिखने और पढ़ने के लिए देनी चाहिए।
2. शिक्षकों ने विद्यार्थियों को निबंध लिखने और पढ़ने के लिए देना चाहिए।

3. शिक्षकों ने विद्यार्थियों को कविता लिखने और पढ़ने के लिए देनी चाहिए।

4. विद्यार्थियों को रचनात्मक कार्य देना चाहिए।

5. विद्यार्थियों को अपने विचार व्यक्त करने का मौका देना चाहिए।

6. भाषा शिक्षण की प्रक्रिया को रचनात्मक व कल्पनाशील बनाना चाहिए।

7. शिक्षक को कक्षा में गोष्ठियाँ, वाद–विवाद प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता, ड्राईंग प्रतियोगिता, सेमीनार, नवीन विषयों पर गोष्ठियाँ, भाषण, पोस्टर प्रतियोगिता का कार्यक्रम कराते रहना चाहिए।

5.11.2 पालक के लिए सुझावः–

1. पालक को छात्रों के लिये कहानी, कविता और निबंध की किताबें लानी चाहिए।

2. सृजनात्मक खिलौने लाने चाहिए।

3. छात्रों को वर्ग पहेली की किताबें लानी चाहिए।

4. छात्रों को बोलने का अपने विचार व्यक्त करने का मौका देना चाहिए।

5. छात्रों के लिए 'शब्द–संधान' की किताबे लानी चाहिए।

5.11.3 विद्यार्थियों के लिए सुझाव–

1. विद्यार्थियों को कविताओं, कहानियों और निबंधों की किताबें पढ़नी चाहिए।

2. वर्ग पहली को पूर्ण करना चाहिए।

3. शब्द–संधान हल करना चाहिए।

4. विद्यार्थियों ने कहानी लेखन, निबंध लेखन, कविता लेखन आदि प्रतियोगिता में सहभाग लेना चाहिए।

5.11.4 भविष्य में शोध हेतु सुझाव–

प्रस्तुत अध्ययन में कक्षा 8वीं के विद्यार्थियों की भाषा सृजनशीलता एवं उपलब्धि का अध्ययन किया गया है। इस प्रकार समस्या से संबंधित भविष्य में शोधकर्ता निम्नलिखित अध्ययन कर सकते हैं।

1. एक जिले के प्राथमिक स्कूलों की भाषा सृजनशीलता एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन कर सकते हैं।
2. एक तहसील के प्राथमिक स्कूलों की भाषा सृजनशीलता एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन कर सकते हैं।
3. प्राथमिक स्कूल की छात्र तथा छात्राओं की भाषा सृजनशीलता एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन कर सकते हैं।
4. भाषा में सृजनशीलता लाने हेतु उपकरण का निर्माण कर सकते हैं।
5. केन्द्रिय विद्यालय और नवोदय विद्यालय के विद्यार्थियों की भाषा सृजनशीलता और शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन कर सकते हैं।
6. शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की भाषा सृजनशीलता एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन कर सकते हैं।

✦✦✦✦